

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

अनुशिक्षित्न् (von शिन् mit अनु) adj. sich worin üben: शब्द्वेद्या<sup>०</sup> DAC. 2, 56.

अनुशिक्ष (1. अनु + शिक्ष) m. N. pr. eines Schlangenpriesters PAÑKĀV. Ba. in Ind. St. I, 33.

अनुशिवम् (von 1. अनु + शिव) adv. nach Çiva Vor. 6, 61.

अनुशिशु (1. अनु + शिशु) adj. vom Jungen (Füllen u. s. w.) begleitet:

अनुशिशुं वडवधेनुम् KĀT. Ça. 19, 4, 5.

अनुशिशु s. शास्त्र mit अनु.

अनुशीलन (von शीलम् mit अनु) n. 1) beständige Wiederholung (पुनः-पुनरभ्यास). — 2) anhaltende Verehrung: अनुकूल्येन कृत्तानुशीलनेन भक्तिरुत्तमा । इति भक्तिरसामृतसिन्धुः । ÇKDra.

अनुशोचन (von श्चु mit अनु) n. das Wehklagen H. 275, Sch. GĀTĀDU. im ÇKDra. तारानु<sup>०</sup> der TĀRĀ R. 4, 20. in der Unterschr.

अनुशोभिन् (von शुभ् mit अनु) adj. glänzend: पुष्पान्ममतादनुशोभिन्: R. 5, 17, 4.

अनुषक् indecl. gaṇa स्वरादि. Wohl von सञ्ज् mit अनु. — Vgl. अनुषक्.

अनुषङ्ग (von सञ्ज् mit अनु) gaṇa न्यङ्गादि. m. 1) Anheftung, Anschluss:

नासिकयोस्त्वनुषङ्गे ऽनुनासिकम् RV. PRĀT. 14, 3. — 2) Sehnsucht: मन्मथशिक्षी — अनुषङ्गाद्भवः AMAR. 91 (Schol. = प्रियस्मरण). — 3) Mitleid

HALĀJ. im ÇKDra. — 4) unmittelbare Folge: न्याये उपनयस्त्रायं (sic) पदस्य निगमने ऽनुषङ्गः । यथा । वक्रिच्यव्याधुमवाद्यापे तस्माद्वक्रिमान् । ÇKDra. — 5) = प्रसङ्गः । अयोदेशे प्रवृत्तावन्यस्यापि सिद्धिः । यथा । नित्यक्रिया तथा चान्ये ऋणुषङ्गकालां श्रुतिमिति स्मृतिः । ÇKDra. — 6) Her-

beziehung eines Wortes aus der Umgebung zur Ergänzung, = एकत्रा-

न्वितपदस्यान्यत्रान्वयः । यथा । कोषो बलं चापकृतमित्यौदो बलान्विता-

पकृतस्य कोषे ऽन्वयः । ÇKDra. कृतेत्यनुषङ्गः ÇĀMk. zu ÇĀk. 42; vgl. अनु-

षङ्गनीय. — 7) der dem consonantischen Auslaut der Wurzeln ange-

gefügte Nasal P. 4, 1, 46, 47, VĀrt. 1; vgl. Siddh. K. zu 7, 1, 59; तेन ये

ऽत्र नकारानुपहतास्ते तृष्पादयः ।

अनुषङ्गिन् (wie eben) adj. sich anheftend, sich anklammernd: सप्तका-

स्यास्य वर्गस्य (von Sünden) सर्वत्रैवानुषङ्गाः M. 7, 52. KULL.: सर्वस्मिन्नेव

रात्रमाण्डले प्रायेणावस्थितस्य.

अनुषङ्गनीय (wie eben) adj. aus der Umgebung zur Ergänzung her-

beizuziehen: उपविश्य परिश्रमविनोदनं कुरुतेत्यनुषङ्गनीयम् Sch. zu ÇĀk.

13, 4.

अनुषट् indecl. gaṇa चादि und स्वरादि; vielleicht von सञ्ज् mit अनु;

vgl. अनुषक्.

अनुषाण (1. अनु + षाण) gaṇa कच्छादि.

अनुष्ठति (von स्तु mit अनु) f. Lob, Preis: इयमु ते अनुष्ठतिश्चकृषे तानि

पौंस्या RV. 8, 52, 8. 57, 7.

अनुष्ठुर्भा (von अनुष्ठुम् + गर्भ) f. N. eines Metrums von der Gattung

Ushñih, dessen erster Pāda fünf, die drei folgenden je acht Silben

zählen. माद्यः पञ्चानरः पाद उत्तरे ऽष्टानरास्त्रयः । अनुष्ठुर्भावं सोल्लिक्सा-

गस्त्ये ऽस्ति पितृं न्विति (RV. 4, 187, 1.) RV. PRĀT. 16, 26. VS. App. LVII.

अनुष्ठुम् (von स्तुम् mit अनु) f. 1) lauter Anruf(?): अनुष्ठुमन्तुं चर्षुष्य-

मोषामन्द्रं नि चिक्रुः कवयो मनीषाः RV. 10, 124, 9. Redē NAIGH. 1, 11.

TRIK. 3, 3, 283. MED. bh. 24. ÇABDAR. im ÇKDra. — 2) N. eines in seiner

Grundform aus vier achtsilbigen Pāda's bestehenden Versmaasses, das

nachmals in den Çloka übergegangen ist. द्वात्रिंशदक्षरानुष्ठुप्त्वोरा ऽष्टा-

क्षराः समाः RV. PRĀT. 16, 27. RV. 10, 130, 4. VS. 8, 47. 10, 13. AV. 8, 9,

14, 20. ÇĀT. BR. 3, 1, 4, 2, 21. 14, 8, 15, 8. (= BṚH. ĀR. UP. 5, 14, 5.) अनुष्ठु-

प्संपेद् 7, 1, 2, 15. In der späteren Metrik umfasst A n u ṣ ṭ u ḥ h eine ganze

Klasse von Metren, die aus 4 × 8 Silben bestehen, COLEBR. Misc. Ess.

II, 152, 159. TRIK. 3, 3, 283. MED. bh. 24. ist aus Brahma's nördlichem

Munde entstanden VP. 42.

अनुष्ठेभन (wie eben) n. ein Lob, das dem eines Andern noch nach-

klingt (?): अनुष्ठुवनुष्ठेभनाद्वायत्रमिव त्रिपदां सतो चतुर्थेन पदेनानुष्ठेभ-

तीति च ब्राह्मणम् Nra. 7, 14.

अनुष्ठा (von स्था mit अनु) adj. dabeistehend, gegenwärtig: अभीमिन्ने

नद्यो वत्रिणां कृता विश्वा अनुष्ठाः (alle zugleich) प्रवृषोषु निष्ठते RV. 4,

54, 10. dem Sinne nach adv. = अनुष्ठु.

अनुष्ठार्तृ (wie eben) m. Ausfühler, Vollfühler (einer Handlung u. s. w.)

AV. 15, 4, 1. 5, 1. °चाणक्यमतवित्तदनुष्ठाता (d. i. °वित् तदनु°) च PAÑKĀT.

253, 12.

अनुष्ठान (wie eben) 1) n. a) das sich-an-Etwas-Machen, Beginnen:

यदि त्वयावश्यमेव समुद्रिणा सकृ विप्रकानुष्ठानं कार्यम् PAÑKĀT. 79, 22. = क-

र्मारम्भः ÇKDra. — b) das Obliegen, Ausüben, Vollbringen: पलायनमप्य-

शवधानुष्ठानम् Hit. 18, 15, v. 1. धर्मे स्वयमनुष्ठाने कस्यचित्तु मकामनः

Selbstausbübung auf dem Gebiete der Tugend ist nur dem einen oder

andern Edlen eigen I, 98. नानुष्ठानैर्विकीनाः स्युः कुलना विधवा इव PAÑ-

KĀT. II, 103. Das obj. im gen.: अस्य नित्यमनुष्ठानं सम्यक्पूर्वादतन्त्रितः M.

7, 100. तत्कर्मणामनुष्ठानम् JĀG. 3, 156. geht im comp. voran: उपरुध्यते

तपोऽनुष्ठानम् ÇĀk. 57, 13. PAÑKĀT. 188, 12. शास्त्रानुष्ठान Vernachlässi-

gung der Lehrbücher Hit. 4, 13. — 2) f. °नी Ausführung, Handlung

KAUC. 81. Vgl. उत्थापनी.

अनुष्ठानशरीर (अनुष्ठान + शरीर) n. der Körper des Ausübens; so

heisst in der SĀMkhja-Lehre das Vehikel des feinern Körpers, das

sich in der Mitte zwischen diesem und dem groben Körper befindet,

COLEBR. Misc. Ess. II, 246.

अनुष्ठु (von स्था mit अनु) adv. dabeistehend; unmittelbar, alsbald:

पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामतूत्प्रशासद्दि द्धावनुष्ठु RV. 4, 95, 3. नर्मते

ऽस्तु नारदानुष्ठु विडुषे AV. 12, 4, 45. — Vgl. अनुष्ठा, अनुष्ठुया, अनुष्ठा.

अनुष्ठुया (von अनुष्ठु) adv. dass.: उभा शंसो मूय सत्यतति ऽनुष्ठुया कृ-

णुक्कृयाण RV. 4, 4, 14.

अनुष्ठेय (von स्था mit अनु) adj. auszuführen, zu vollbringen: मया तु

यदनुष्ठेयम् R. 4, 6, 20. पौरुषायदनुष्ठेयम् 6, 100, 2.

अनुष्ठ्या (aus अनुष्ठुया) adv. 1) dabeistehend, unmittelbar: पैद्वानुष्ठा

चतुष्या (mit eigenen Augen) प्रज्ञानात्यत्र प्रज्ञानाति AIR. Ba. 1, 8. तस्माद्य-

तेरा विवदमानयोराकाङ्क्षमनुष्ठा चतुष्यदर्शमिति तस्य ब्रह्मधाति 2, 40. —

2) sofort, nach einander: अनुष्ठा च यजेति यदाह सुयज्ञा च यजेति ÇĀT. Ba.

1, 4, 2, 17. अनुष्ठा यतत् 5, 2, 6. तदा अनुष्ठा यद्धस्तेन प्रदीयते 2, 1, 2, 12.

अग्निरनुष्ठा स्व रेतः प्रजनयिष्यते 2, 4, 17. पांडुशतरस्य वड्क्यस्ता अनु-

ष्ठ्याद्यावयतात् (darnach P. 7, 1, 39, Sch. zu verbessern) AIR. Ba. 2, 6. —

Vgl. अनुष्ठु.

अनुष्ठ (3. घ्र + उल्ल) 1) adj. f. घ्रा. a) nicht heiss: अनुष्ठानिर्घ्रानाभिरद्भिः

M. 2, 61. kalt: अनुष्ठैः — घ्रानन्दाश्रुविन्दुभिः RAGH. 12, 62. Vgl. अनुष्ठगु.